साहित्य और शिक्षा में भाषा का महत्व

सुजाता एन. मगदूम

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, शासकीय प्रथम श्रेणी महाविद्यालय, सादलगा।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263546

ABSTRACT:

भाषा मानव जीवन की आत्मा और ज्ञान, संस्कृति व संस्कारों की संवाहक है। साहित्य और शिक्षा दोनों क्षेत्रों में इसका महत्व अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भाषा साहित्य के सृजन का माध्यम है, जो विचारों, अनुभूतियों और जीवनानुभवों को सौंदर्य और अभिव्यक्ति प्रदान करती है। यह साहित्य को सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का वाहक बनाती है। शिक्षा में, भाषा शिक्षण और अधिगम की आधारशिला है, जो ज्ञान के प्रसार, विचारों की अभिव्यक्ति, संज्ञानात्मक कौशल के विकास और सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों के संवाहन में निर्णायक भूमिका निभाती है। इस प्रकार, भाषा साहित्य की आत्मा और शिक्षा की आधारशिला है, जिसके बिना दोनों का अस्तित्व अधूरा है।

KEYWORDS:

भाषा, साहित्य, शिक्षा, संस्कृति, संवाहन.

भाषा मानव जीवन की आत्मा है। यह केवल विचारों और भावनाओं के आदानप्रदान का साधन ही नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और संस्कारों का संवाहक भी है। हमारी भाषा हमारा स्वयं का प्रतिबिम्ब होती है। साहित्य और शिक्षा—दोनों ही क्षेत्रों में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

भाषा के बारे में विद्वानों के विचारों के अनुसार, यह मानव विचार, संस्कृति और सामाजिक जुड़ाव का मूल आधार है। विभिन्न विद्वानों ने भाषा को सामाजिक संपर्क का माध्यम, सांस्कृतिक धरोहर को हस्तांतरित करने का साधन और बौद्धिक विकास की कुंजी बताया है।

भाषा मनुष्य जीवन का अद्भुत आविष्कार है। इसके बिना संसार की कल्पना असंभव है। भाषा की उत्पत्ति एक रहस्य है, और कोई भी सर्वसम्मत सिद्धांत नहीं है, लेकिन माना जाता है कि यह मानव के विकास से जुड़ी हुई है। प्रारंभिक मानव ने संवाद करने के लिए संकेतों का उपयोग किया होगा। भाषा का मौखिक रूप पहले आया, जहां मनुष्य ध्वनियों को वस्तुओं और भावनाओं से जोड़कर संचार करते थे। धीरेधीरे, जैसेजैसे समाज और संस्कृतियाँ जटिल हुईं, भाषाएँ विकसित हुईं, जिनमें नए शब्द, व्याकरण और वाक्यविन्यास शामिल हुए। भाषा का विकास शिकार करने, खेती करने और अपने कठोर वातावरण से सफलतापूर्वक बचाव करने के लिए एकदूसरे से संवाद करने की मानवीय ज़रूरत से हुआ। मनुष्यों में वाणी का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों का मानना है कि यह क्षमता हमारे मस्तिष्क में प्राइमेट्स से विकसित होने के दौरान उत्पन्न हुई होगी, लेकिन वे ठीक से नहीं जानते कि कैसे। ये शोधकर्ता मानव मस्तिष्क की तुलना अन्य प्राइमेट्स के मस्तिष्क से करके यह देख सकते हैं कि विकास के दौरान मानव वाणी प्रदान करने के लिए इसमें कैसे बदलाव आए।

भाषा का उपयोग करके संवाद करने की क्षमता ने मानव प्रजाति को जीवित रहने के बेहतर अवसर प्रदान किए। एक नए विश्लेषण से पता चलता है कि हमारी भाषा कम से कम 135,000 वर्ष पहले मौजूद थी, तथा संभवतः इसके 35,000 वर्ष बाद भी भाषा का व्यापक प्रयोग किया गया।

दुनिया की सबसे पहली भाषा कौन सी है, यह तय करना मुश्किल है, लेकिन लिखित भाषा के रूप में सबसे प्राचीन प्रमाण सुमेरियन भाषा के हैं, जो 5,000 साल से भी ज़्यादा पुरानी मानी जाती है। हालांकि, आज भी जीवित सबसे प्राचीन भाषा के तौर पर तमिल भाषा को माना जाता है, जो 5,000 साल से अधिक पुरानी होने के साथसाथ आज भी बड़ी संख्या में लोगों द्वारा बोली जाती है।

साहित्य और शिक्षा में भाषा का अत्यंत महत्व है; भाषा साहित्य के सृजन का माध्यम है और शिक्षा का आधार है, जो विचारों के आदानप्रदान, सांस्कृतिक समझ, मानवीय अनुभव को व्यक्त करने, और विचारों को परिष्कृत करने में मदद करती है। साहित्य भाषा के सौंदर्य

को बढ़ाता है, नए शब्द और शब्दावली प्रदान करता है, और जीवन के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराता है। शिक्षा में, भाषा छात्रों के कौशल को विकसित करती है, उनकी कल्पना शक्ति को प्रोत्साहित करती है, और उन्हें विभिन्न संस्कृतियों से जोड़ती है।

साहित्य में भाषा का महत्व:

साहित्य की आत्मा भाषा में ही प्रकट होती है। बिना भाषा के साहित्य की कल्पना भी असंभव है। कवि, लेखक और चिंतक अपने विचारों, अनुभूतियों और जीवनानुभवों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करते हैं। भाषा साहित्य को सौंदर्य, माधुर्य और प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान करती है। भाषा के माध्यम से साहित्य समाज के विचारों, भावनाओं और संस्कृति को पीढ़ीदरपीढ़ी संचारित करता है। साहित्य और भाषा दोनों एकदूसरे के पूरक हैं। इनके बिना एकदूसरे का अस्तित्व अधूरा है। भाषा साहित्य की आधारशिला है।

साहित्य में भाषा के महत्व पर विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार रखे हैं, जैसे रुडयार्ड किपलिंग ने कहा, "शब्द मानव जाति द्वारा उपयोग की जाने वाली सबसे शक्तिशाली दवाएँ हैं,"। किपलिंग के अनुसार, शब्दों में ही ज्ञान, मनोरंजन और प्रभाव पैदा करने की अपार क्षमता होती है। बेंजामिन ली व्होर्फ का मानना था कि "भाषा हमारे सोचने के तरीके को आकार देती है"। यह विचार 'व्होर्फ़ परिकल्पना' का हिस्सा है, जिसके अनुसार भाषा ही सोच को निर्देशित करती है। साहित्य वह माध्यम है जो भाषा को जीवंत करता है और उसके ज़रिए भावनाओं, विचारों, और संस्कृति को प्रकट करता है।

साहित्य की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही संभव होती है। भाषा ही लेखक की अनुभूतियों, भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं को रूप देती है। साहित्य भाषा का सौंदर्य बढ़ाता है। साहित्यिक कृतियाँ भाषा को निखारती, सँवारती और उसे नए आयाम देती हैं। भाषा के शब्दकोष में नए शब्द, मुहावरे, अलंकार और शैली साहित्य से ही विकसित होते हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव भाषा समाज की बोलीबानी को दर्शाती है, वहीं साहित्य उस भाषा को संस्कृति, इतिहास और परंपराओं से जोड़ता है। साहित्य के माध्यम से भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति का वाहक भी बनती है।

भाषा और साहित्य की परस्पर प्रगति एक दूसरे के साथ ही हो सकती है। जहाँ भाषा में नवीनता आती है, वहाँ साहित्य में भी नए प्रयोग दिखाई देते हैं। साहित्य की विविध विधाएँ (कविता, कथा, नाटक, निबंध) भाषा की विविध शैलियों को जन्म देती हैं। निष्कर्षत: भाषा और साहित्य का संबंध शरीर और आत्मा की तरह है। भाषा साहित्य को जन्म देती है और साहित्य भाषा को जीवंत व प्रभावी बनाए रखता है। दोनों का विकास परस्पर आश्रित है।

शिक्षा में भाषा का महत्व:

शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान का प्रसार करना है, और ज्ञान का प्रसार भाषा के बिना संभव नहीं। भाषा शिक्षण और अधिगम की आधारशिला है। छात्र अपनी जिज्ञासा, प्रश्न और विचार भाषा के माध्यम से प्रकट करता है। भाषा के द्वारा ही शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संवाद संभव होता है। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा अधिक प्रभावी होती है, क्योंकि यह समझने और आत्मसात करने में सहायक होती है।

शिक्षा और पाठ्यचर्या में भाषा का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि यह ज्ञान के आदानप्रदान का प्राथमिक माध्यम है, जिससे छात्रों को सभी विषयों को समझने, विचारों को व्यक्त करने, और संज्ञानात्मक कौशल विकसित करने में मदद मिलती है। भाषा न केवल सीखने का एक विषय है, बल्कि यह सोचने, संवाद करने और संस्कृति व समाज से जुड़ने का एक शक्तिशाली उपकरण भी है, जो बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पाठ्यक्रम में भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने जैसी गतिविधियों के माध्यम से सभी विषयों में सीखने में सहायता करती है। भाषा शिक्षण के प्रति एक एकीकृत दृष्टिकोण छात्रों की विषय समझ और मूल्यांकन क्षमता को बढ़ाता है और साथ ही उच्चस्तरीय चिंतन कौशल को भी बढ़ावा देता है। अभिव्यक्ति और अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों में भाषा के महत्व को पहचानकर, शिक्षक भाषा विकास को बढ़ावा दे सकते हैं, संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में सुधार कर सकते हैं और छात्रों की समग्र शैक्षणिक सफलता में सहायक हो सकते हैं।

शिक्षा में भाषा का अधिकाधिक महत्व होता है। भाषा शिक्षा का सबसे मूलभूत साधन है। ज्ञान का अर्जन, विचारों का आदानप्रदान और भावनाओं की अभिव्यक्ति भाषा के बिना संभव नहीं है। शिक्षा और भाषा का संबंध गहरा और अविभाज्य है।

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा विद्यार्थी ज्ञान को ग्रहण करता है। पाठ्यपुस्तकों, व्याख्यानों और चर्चाओं के रूप में समस्त शैक्षिक सामग्री भाषा पर आधारित होती है। भाषा विचार अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा विद्यार्थी को अपने विचार, प्रश्न और जिज्ञासाएँ स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सक्षम बनाती है। बिना भाषा के विचारों की अभिव्यक्ति अधूरी रह जाती है।

भाषा सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का संवाहक है। भाषा केवल ज्ञान ही नहीं देती, बल्कि समाज की संस्कृति, परंपरा और नैतिक मूल्यों को भी विद्यार्थियों तक पहुँचाती है। भाषा मानसिक और बौद्धिक विकास का साधन है। माँबोली और शिक्षण की भाषा विद्यार्थी के बौद्धिक विकास को गति देती है। भाषा में दक्षता सोचने, तर्क करने और निर्णय लेने की क्षमता को प्रखर करती है। भाषा के माध्यम से विद्यार्थी समाज के अन्य लोगों से जुड़ते हैं। यह सहयोग, सहअध्ययन और सहजीवन को संभव बनाती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यावहारिक जीवन में सफलता भी है। भाषा में दक्षता करियर, नौकरी और जीवनव्यवहार को सरल बनाती है। शिक्षा में भाषा केवल पाठ्यवस्तु को समझने का साधन नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण व्यक्तित्व विकास, सामाजिकसांस्कृतिक जुड़ाव और जीवननिर्माण का आधार है।

भाषा मानसिक गतिविधि और संज्ञानात्मक परिशुद्धता का समर्थन करती है। शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए भाषा विचारों को अधिक स्पष्टता से व्यक्त करने में मदद करती है

निष्कर्ष:

भाषा और साहित्य का घनिष्ठ और अन्योन्याश्रित संबंध है, जहाँ भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है और साहित्य उस भाषा का कलात्मक प्रयोग है। भाषा विचारों और भावनाओं को संप्रेषित करती है, जबकि साहित्य, खासकर लिखित साहित्य, भाषा के भीतर गहराई, अर्थ और

भावना को जोड़ता है। साहित्य भाषा को नए आयामों से परिचित कराता है, जबकि भाषा साहित्य की रचना और व्याख्या का आधार प्रदान करती है।

साहित्य भाषा को समृद्ध करता है और शिक्षा उसे व्यवस्थित ढंग से समाज में पहुँचाती है। शिक्षा साहित्य को समझने और आत्मसात करने की क्षमता विकसित करती है। भाषा दोनों के बीच सेतु का कार्य करती है, जिसके माध्यम से व्यक्ति न केवल ज्ञान प्राप्त करता है, बल्कि मानवीय मूल्यों और संस्कारों से भी जुड़ता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भाषा साहित्य की आत्मा और शिक्षा की आधारशिला है। बिना भाषा के न तो शिक्षा का आदानप्रदान संभव है और न ही साहित्य की सृष्टि। साहित्य और भाषा का गहरा अंतरसंबंध है।

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.